आशा की किरन

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अ़ली नदवी (रह़०)
''अ़ली मियाँ''

पयामे इंसानियत फ़ोरम,
पोस्ट बाक्स न0 93, लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

(1)

अनुमुख

भारत एक विशाल देश है विश्व में यह अपना एक स्थान रखता है। हज़रत मौलाना अली मियां का कथन है कि "इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से" इस कथन से लाभ उठाते हुए हम देशवासियों को चाहिए कि देश की उन्नति के बारे में विचार करें।

जब तक देशवासियों के हृदय में मानवता का सन्देश उत्पन्न नहीं होगा उस समय तक देश की उन्नति नहीं हो सकती है।

विश्व के महान विचारक "मानवता अभियान के संस्थापक हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (अली मियां रह०) के भाषण का हिन्दी अनुवाद मुहम्मद हसन अन्सारी सहायक सम्पादक हिन्दी मासिक "सच्चा राही" ने किया है। यह भाषण ३ दिसम्बर १९७७ई० को भोपाल में आयोजित बुद्धिजीवियों के एक सम्मेलन में दिया गया था। इस जल्से में समाज के विभिन्न वर्गों के लोग, शिक्षा संस्थाओं के पदाधिकारी, विधायक, आदि बड़ी संख्या में मौजूद थे जल्से की अध्यक्षता श्री भाव ठाकरे ने की।

समय की मांग तथा उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए हिन्दी अनुवाद सरल तथा सुबोध भाषा में भाई बहनों के लिए पुनः प्रकाशित किया जा रहा है आशा है कि इसे पढ़कर हमारे अन्दर मानवता एवं राष्ट्रीय एकता के प्रति आदर व सम्मान की भावना जागृत होगी।

सैयद अबुल हसन नदवी

www.abulhasanalinadwi.org

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

आशा की किरन

सज्जनों !

मुझे इस विशाल समागम को देखकर बहुत खुशी हुई, जो इन्सानियत के मसले पर ग़ौर करने के लिए यहाँ एकत्र हुआ है। इस जनसमूह को किसी स्वार्थ और व्यक्तिगत लाभ की भावना ने जमा नहीं किया। इस बड़े मज्मा को देखकर मेरे अन्दर एक हौसिला और नई उमंग पैदा हुई है। मानवता के भविष्य की ओर से आशा की एक किरन नज़र आई कि इसका भविष्य उज्ज्वल है और निराश होने का कोई कारण नहीं । दुनिया का बनाने वाला, मानव जाति से निराश नहीं उसकी मेहरबानियां, उसकी दया दृष्टि उसके वरदान इस संसार पर बराबर बरस रहे हैं। सृष्टि की हर चीज़ मानव जाति के प्रति आशावान है।

लेकिन हमारा मामला एक दूसरे के साथ यह बताता है कि हम मानव से निराश हैं। किसी विचारक ने कहा है कि जो बच्चा इस दुनिया में आता है वह इस बात का एलान करता है कि ईश्वर मानव जाति

www.abulhasanalinadwi.org

से निराश नहीं। अगर निराश होता तो इस नस्ल में बढ़ोत्तरी न होती। वह इन्सान इन्सान को अपनी किसमत आज़माने इस दुनिया में न भेजता। लेकिन इन्सान इन्सान का गला काटता है, इन्सान इन्सान का शोषण करता है, जोंक की तरह खून पीता है उसे ग्राहक समझकर फायदा उठाता है और अपने आचरण से इसका एलान करता है कि वह मानवता की क्षमताओं तथा उसके भविष्य से निराश है। ईश्वर और मनुष्य के यह प्रदर्शन बराबर जारी हैं। वर्षा का एक–एक बूंद इस बात का एलान करता है कि दुनिया का पैदा करने वाला अपनी प्यासी और अत्याचारी मानवजाति से अभी निराश नहीं है। धरती अंकुरण शक्ति रखती है, उस की पैदावार इस बात की एलान है कि ईश्वर इस धरती के रहने वालों से निराश नहीं। सूरज चमकता है, वहाँ कोई हड़ताल नहीं, चाँद बराबर निकलता है और अपनी चान्दनी की चादर को फैलाता है, आँखों को ठंडक पहुंचाता है। यह सब इस बात का एलान है कि ईश्वर मानव से अभी निराश नहीं। लेकिन हमारा और आपका व्यवहार यह साबित करता है कि हम मनुष्य से निराश हैं। हम अपने आचार–व्यवहार से

इस बात का प्रदर्शन कर रहे हैं कि हम इस मानव को, जो ईश्वर की रचना का सर्वोत्कृष्ट नमूना है, कोई महत्व नहीं देते।

ईश्वर की महिमा और प्रकृति का सौन्दर्य हर वस्तु में है। फल, कली, बूंद, घास का तिनका, मिट्टी का कण, पेड़ के पत्ते जिस चीज को देखिए तो मालूम होगा कि इस में एक दुनिया है। इन सब से बढ़कर आकर्षक और मनमोहक–रचना मनुष्य की है। सारी चीजें, समस्त सृष्टि इसकी सेवा के लिए पैदा की गई। यह सब इस बात का एलान करती है कि मनुष्य सर्वोत्कृष्ट प्राणी है। दुनिया की बारात का दूल्हा है। किन्तु हमारा और अपका कव्यवहार यह साबित करता है कि मनुष्य में कोई गुण नहीं। हम अपने आचरण से खुदा की अदालत में अपने खिलाफ मुकदमा दायर करते हैं कि हमको दुनिया से उठा लिया जाए, मानो हम फ़रिश्तों की उस बात को साबित करना चाहते हैं जिसकी काट खुदा ने की थी। जब मानव–रचना के समय ईश्वर ने कहा था "मैं इस धरती पर अपना ख़लीफ़ा बनाना चाहता हूँ", तो फ़रिश्तों ने आशंका व्यक्त की थी, "क्या आप ऐसे को ख़लीफ़ा बना रहे हैं जो जमीन पर

www.abulhasanalinadwi.org

बिगाड़ पैदा करेगा और खून बहाएगा''। जब ख़ुदा ने चीजों के बारे में आदम से सवाल किया तो उसने ठीक जवाब दिया फ़रिश्ते जवाब नहीं दे सके। ख़ुदा ने इन्सान का जिताया था हम उसको हरा रहे हैं।

ख़ुदा ने कहा था कि तुमको मालूम नहीं कि इन्सान में कैसे–कैसे गुण हैं। उस से ज्ञान का सागर उबलता है, समुद्र में वह विशालता व गहराई न होगी जो उसमें है। उसकी आंखों में मुहब्बत की जो चमक है वह तुम नहीं पेश कर सकते। उसके दिल में नर्मी है, प्रेम है, ममता है, उस पर दर्द की चोट लगती है जिससे तुम वंचित हो। किसी पर तलवार चले, किसी के तलुओं में काँटा चुभे तो उसकी चुभन उसे अपने दिल में महसूस होती है। मनुष्य के पास जो सबसे बड़ी पूंजी है वह दया की पूंजी है, प्रेम की पूंजी है, वह एक आँसू है जो इन्सान की आँखों से किसी विधवा के सर को नन्गा, किसी ग़रीब के चूल्हे को ठँडा देखकर किसी मरीज़ की कराह को सुनकर टपक पड़ता है। आँसू का वह बूँद जो समुद्र में डाला जाये तो उसे पवित्र कर देगा, गुनाहों के जंगल में डाल दिया जाये तो सब को जलाकर ज्योति से बदल दे। फरिश्ते सब कुछ पेश कर सकते हैं लेकिन

www.abulhasanalinadwi.org

आँसू का वह बून्द नहा पश कर सकत, ।जसक। क़ीमत हम आप ने भी नहीं पहिचानी, जो एक इन्सान दूसरे इन्सान के लिए बहाता है।

'हम रात को उठकर रोते हैं जब सारा आलम सोता है।'

देवदूत अपने मालिक को देख देखकर और उसके अस्तित्व व गुणों को पहिचान कर नहीं सो सकते, लेकिन वह इन्सान जो किसी इन्सान की मुसीबत व दर्द के कारण नहीं सो सकता उसके जागने को फरिश्तों का जागरण नहीं पहुंच सकता। मनुष्य के पास सबसे अनमोल चीज़ यह है कि वह दूसरे के दुख दर्द से प्रभावित होता है। उसके अन्दर प्रेम का पदार्थ है उसको गतिशील करने वाली कोई चीज मिल जाये तो वह सक्रिय हो जाता है। फिर न मज़हब को देखता है न जात–पात को। इन्सान इन्सान का दिल देखता है उसकी पीड़ा को महसूस करता है जिस प्रकार चुम्बक लोहे को खींचता है और वह खींचने पर मजबूर है उसी प्रकार इन्सान के दिल का चुम्बक इन्सान को खींचता है।

अगर इन्सान से यह दौलत छिन जाये तो यह

www.abulhasanalinadwi.org

दीवालिया हो जायेगा। यदि कोई देश इससे वंचित हो जाये, यदि अमरीका की दौलत, रूस की शासन व्यवस्था, अरब देशों के पेट्रोल के स्रोत हों, हुन बरसता हो, सोने और चांदी की गंगा–जमुना बहती हो, लेकिन उस देश में प्रेम स्रोत शुष्क हो जाये तो वह देश कंगाल है। उस देश पर ऐश्वरीय वरदान अवतरित न होंगे। अभी इन्सान की आँख आँसू बहाने के क़ाबिल है अभी इन्सान का दिल तड़पने और सुलगने और चोट खाने के क़ाबिल है। जो दिल इस काबिल नहीं ऐसे दिल को दिल नहीं कहते। बल्कि पत्थर की सिल कहते हैं। जो ईश्वर के दरबार में कौड़ी के क़ाबिल नहीं चाहे वह मुसलमान का दिल हो या हिन्दू, सिख, ईसाई का दिल हो। दिल तो इसलिए है कि तड़पे, लरज़े, रोये। इसमें धरती से अधिक हरियाली, झरने से अधिक जलभराव, सृष्टि से अधिक विशालता और बादलों से अधिक बरसने की क्षमता है।

वह आँख इन्सान की आँख नहीं जिसमें नमी न हो। वह दिल इन्सान का दिल नहीं चीते का दिल है जिस पर कभी दर्द की चोट न लगे। जो कभी मानवता की पीड़ा में रोना तड़पना न जाने। वह

www.abulhasanalinadwi.org

माथा जिसपर कभी पाश्चाताप का पसीना न आये वह माथा नहीं बल्कि कोई चट्टान है। जो हाथ मानवता की सेवा के लिए नहीं बढ़ता वह अपंग है। वह हाथ जो मनुष्य का गला काटने के लिए बढ़ता है उससे शेर का हाथ बेहतर था। अगर इन्सान का काम काटना था तो उसके सीने में धड़कते हुए दिल के बजाय एक तिजोरी रख दी जाती है। अगर इन्सान का काम मात्र तोड़–फोड़ की योजना बनाना था तो उसके अन्दर इन्सान का दिमाग न रखा जाता बल्कि किसी राक्षस का दिमाग़ रख दिया गया होता।

पारिख साहब ने अपने भाषण में मानव शरीर की रचना के अजूबे बताये हैं, लेकिन आप मनुष्य के हृदय के अजायबात देखें तो शरीर के अन्दर के अजूबे मान्द पड़ जायेंगे। इसको ऐसा दिल दिया है कि पूरब में किसी को तक़लीफ़ हो तो वह पच्छिम में तड़प उठे। यह दिल की ज़िन्दगी थी कि बदर की लड़ाई में जो लोग कैदी बनाये गये और उन के हाथ बान्ध दिये गये तो अल्लाह के रसूल स० इन बन्दियों की तकलीफ़ के एहसास से रात भर न सो सके। अगर कोई बच्चा रोता तो आप नमाज़ संक्षिप्त कर

www.abulhasanalinadwi.org

देते कि कहीं उसकी माँ बेचैन न हो। जो दिल किसी का दिल दुखाये, किसी को तकलीफ़ पहुंचाये तो वह दिल दिल नहीं है।

भाईयों ! ईश्वर का अपनी सृष्टि के साथ मामला बताता है कि ईश्वर मानव जाति से निराश नहीं। आपका वाटर वर्क्स पानी रोक सकता है, आपका पावर हाउस बिजली रोक सकता है तो क्या ईश्वर अपने वरदानों को नहीं रोक सकता? जिस प्रकार यहाँ की नगरपालिका भोपाल वासियों से निराश नहीं और उनकी सेवा कर रही है ईश्वर इसी प्रकार दुनिया को पानी भी दे रहा है और रोटी भी दे रहा है और सेवा में लगा हुआ है। किन्तु हम अपने आचरण से क्या साबित कर रहे हैं? क्या हम साबित कर रहे हैं, कि हम इन्सान को कोई भी बड़ी चीज़ समझते हैं, कोई ऊंची चीज़ समझते हैं? अपने बराबर समझते हैं, अपने शरीर का अंग समझते हैं?

वह व्यवहार मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा है। बाहर से कोई खतरा नहीं है। वह युग बीत गया जब क़ौमें दूसरी क़ौमों पर चढ़ाई करती थीं । खतरा आन्तरिक है। वह है इन्सान दुश्मनी और मानवता

www.abulhasanalinadwi.org

को कुचलने का खतरा । मानव–कल्याण की ओर से आंखें बन्द कर लेना। खतरे से मुल्क को भी और कौम को भी बचाने की ज़रूरत है।

मुझे यहीं के एक सन्त की कही हुई कहानी याद आ गयी जिनका हाल ही में निधन हुआ है, वह कहते हैं, "एक बारात बड़ी धूम धाम से जा रही थी बैन्ड बाजा भी था रौशनी और मशाल भी। बारात देखने वालों की भीड़ थी। एक व्यक्ति बड़े ध्यान से बारात देख रहा था, कुछ देर बाद उसने कहा, 'दूल्हा कहाँ है?' लोगों ने कहा बेकार बकते हो, बारात नहीं देख रहे हो, तमाशा नहीं देखते हो आनन्द नहीं ले रहे हो? निरर्थक प्रश्न करते हो किन्तु वह व्यक्ति बड़ा यथार्थवादी था। उसने कहा बारात तो बहुत अच्छी है लेकिन दूल्हा नज़र नहीं आता। इसपर सबको ध्यान आया कि देखना चाहिए दूल्हा सचमुच नज़र नहीं आ रहा है। अब जो खोजबीन प्रारम्भ हुई तो मालूम हुआ कि दूल्हा घोड़े पर सवार था। घोड़े ने रास्त के किसी गढ़े में उन्हें गिरा दिया है और बारात अपने शोर व हंगामा में दूल्हो के आगे बढ़ती रही, बारात की धूम धाम और शोर व हंगामा में दूल्हा का किसी को होश ही नहीं

www.abulhasanalinadwi.org

रहा।

मुझे डर है कि पूरब से पच्छिम तक मानवता की जो बारात आधुनिक सभ्यता के साथ निकल रही है, जिसके दृश्य मैंने इस देश में भी देखे हैं, और यूरोप व अमरीका में भी। कहीं यह बिन दूल्हा के बारात न हो। मानवता के इस बारात का दूल्हा मानव है। मानवता के इस दूल्हा की बारात पर आँसू बहाने वाला, इसकी चिन्ता करने वाला कोई नहीं। इस नगर में कितने आदमी हैं जो मानवता की बारात के दूल्हा कहलाने वाले सच्चे इन्सान हों ? ऐसा मानव कहां है जिसकी दृष्टि शुद्ध मानवता पर हो जिसे खोकर पाने का मज़ा आये, जिसे हार कर जीतने का मज़ा आये।

सब अपनी जेब, अपना घर भरने की चिन्ता में हैं। और अपनी पार्टी को नफ़ा पहुंचाने में प्रयत्नशील हैं। और बहुत उन्नति की तो नेशन को फ़ायदा पहुंचाने की सोचने लगे। नेशन भीं एक परिवार है। परिवार छोटा–बड़ा होता है। नेशनलिज़्म भी एक क़िस्म की कुंबा परवरी है। नेशनलिज़्म (क़ौमपरस्ती) को शायद मैं किसी समय ज़रूरी समझूं।

www.abulhasanalinadwi.org

मेरा सम्बन्ध उस वर्ग और उस गिरोह से है जिसने आजादी की लड़ाई में भरपूर हिस्सा लिया। और मुल्क व क़ौम की आज़ादी के लिए उस समय संघर्ष प्रारम्भ किया जब आज़ादी का नाम भी कोई नहीं जानता था, लेकिन समझता हूं कि नेशनलिज़्म भी एक नैरोमांइडेडनेस (संकुचित दृष्टिकोण) है। मानवता इससे भी अधिक विशाल है।

तमाम कौमें इन्सानियत की डालें (शाखें) हैं, असल चीज़ इन्सानियत है। इस मानवता को तबाही से बचाने के लिए आज कितने लोग और कितनी पार्टियां आदमीयत के नाम से सकिय और इन्सानियत को बचाने के काम में लगी हैं। सभ्यता व संस्कृति, राजनीति व प्रशासन, साहित्य, दर्शन शास्त्र, ज्ञान और कला कौशल के आशियाने इन्सानियत की शाख पर क़ायम है। अगर इन्सानियत की शाख बाकी है तो आप जैसा चाहें वैसा नशेमन बना लें, लेकिन अगर शाख़ ही न रही तो नशेमन कैसे बाक़ी रहेगा। आज मानवता की डाल पर कितने प्रहार किये जा रहे हैं। आग लगाई जा रही है। हर व्यक्ति इस प्रयास में है कि आदमीयत की शाख पर बड़े से बड़ा प्रहार करे।

www.abulhasanalinadwi.org

आज हमारे देश में मनुष्य को मनुष्य से प्रेम और सहानुभूति नहीं रही। पहलू में दिल नहीं जो इन्सानियत का दर्द महसूस करते हों। हर एक को अपनी–अपनी पड़ी है। हमारे देश में जब रैल अथवा हवाई दुर्घटनाएं होती हैं तो हमारे समाज का नैतिक पतन खुलकर सामने आ जाता है। लोग दुर्घटना के शिकार होने वाले मुसीबतज़दा लोगों की मदद के बजाय उनकी कलाई की घड़ियां और जेबों से पर्स निकालते हैं यह खतरा वह सिगनल है, वह एलारम है जिस पर पूरी सोसाइटी को चौकन्ना होना चाहिए।

साम्प्रदायिक दंगे हिन्दु–मुस्लिम मसला नहीं बल्कि मानवता के अपमान के लक्षण हैं। असल में रोग मानवता का अवमूल्यन है। हमने कभी–कभी पेड़ पौधों और जानवरों को मनुष्य से अधिक महत्व दिया है। हमने प्रायः मनुष्य की अपेक्षा पैसे को प्राथमिकता दी है। यद्यपि पैसा इन्सानी हाथ का मैल है। हमने पैसो को मनुष्य के हृदय, उसकी आत्मा से अधिक महत्व दिया है, यद्यपि ईश्वर ने मनुष्य को सर्वोत्कृष्ट प्राणी बनाया है। मनुष्य के सर्वोत्कृष्ट होने की इससे बढ़कर क्या दलील हो सकती है कि ईश्वर ने मनुष्य की भख, प्यास,

www.abulhasanalinadwi.org

बीमारी को अपनी समस्या बताया है। जैसा कि एक हदीस का सारांश है कि अल्लाह फ़रमाता है कि किसी भूखे को खाना खिलाना, किसी प्यासे को पानी पिलाना और किसी बीमार की तीमारदारी करना मानो मेरे साथ यह सद्व्यवहार करना है। मनुष्य के मुकाबले में दुनिया के तमाम उपमहाद्वीप रख दिये जायें तो मनुष्य का पलड़ा भारी होगा। सारे महाद्वीप मनुष्य के लिए पैदा किये गये हैं, मनुष्य इनके लिए नहीं पैदा किया गया।

जिस मनुष्य को रातों को जाग–जाग कर खूने जिगर पिला पिला कर पाला गया है जिससे उसके माता–पिता ने सारे परिवार ने आशायें बान्ध रखी है, जो ईश्वर की अमानत लेकर दुनिया में आया है, जो संसार की मूल आत्मा है, उसको मारा जाता है। यह हत्यारे वह लोग हैं जिनके सामने मनुष्य की वास्तविकता, मानव का इतिहास, माँ–बाप का प्यार नहीं है। इस मानव को बनाने के लिए शिक्षण संस्थाओं, विद्वानों व गुरूजनों ने जो परिश्रम किया है, जतन किये है, वह उनके सामने नहीं। यदि यह तथ्य सामने होते तो दुनिया में कोई न मिलता जो

www.abulhasanalinadwi.org

दारा, चंगेज व हलाकू, हिटलर व सीज़र जिन्होंने इन्सानियत की खेती को आग लगाई यह सब इन्सान की हक़ीक़त से अनभिज्ञ थे, और यह नहीं जानते थे कि मानव के विरुद्ध बिगाड़ पैदा करने वालों पर ईश्वर को कितना क्रोध है।

भाईयों ! यदि आपके हृदय में मानवता के प्रति आदर की भावना, उसके प्रति प्रेम का स्रोत है तो उसे सक्रिय होना चाहिए। वह लोग जो इस देश में हमसे अधिक प्रभाव रखते हैं उन्हें अपनी कुर्सियों कों छोड़कर चाहे वह मंत्री के उच्चतम पद की कुर्सी हो, यूनिवर्सिटियों और आराम की जगहों को छोड़कर इस देश को बचाने के लिए मैदान में आना चाहिए। यह देश न बचा तो यूनीवर्सिटियां, शासन, लोकतंत्र कहां रहेंगे, इनका अस्तित्व कहां रहेगा और इनको पनाह कहां मिलेगी?

देश न रहे, मानवता दम तोड़ दे तो संयुक्त राष्ट्र संघ में क्या जानवर प्रतिनिधित्व करेंगे? इन्सान होना शर्त है। क़ौम में क़ौमियत का एहसास और राजनीतिक चेतना का होना शर्त है। चाहिए तो यह था कि इस देश में बड़ी–बुड़ी कुर्सियों से और ऊंचे ऊंचे पदों से उतर कर लोग आते तथा मानवता व

www.abulhasanalinadwi.org

देश को बचाते। लेकिन जब हमने देखा कि कोई नहीं आ रहा है तो हमने सोचा कि हम ही चल पड़ें। विश्व इतिहास, राष्ट्रों के इतिहास, सामाजिक व धार्मिक सुधार के इतिहास में कभी कोई सी आवाज़ उठी और उसके बाद वह सबके दिल की आवाज़ बन गयी और उसने समाज में क्रान्ति पैदा कर दी। इसी उम्मीद पर हम आये हैं कि हम जगायें, जागने के बाद सब कुछ हो सकता है और जागने के लिए हल्की आवाज़ बल्कि पत्तों के गिरने की आवाज़ भी काफ़ी होती है।

इस समय का सबसे बड़ा काम यह है कि हम अपने–अपने धर्म की परिधि में मानवता के प्रति आदर की भावना पैदा करने वाले और मानवता को ज़िन्दा करने का प्रयास करें। उसके बाद अध्ययन व चिन्तन और ईश्वर की मदद से अपने लिए रूचिकर जीने की कला का चयन करें। लेकिन पारस्परिक विश्वास और प्रेम का वातावरण पैदा कीजिए। इन्सान को गले लगाइये तब आगे बात होगी। अगर इन्सानियत ही निकल गयी तो किससे बात की जाये।

मनुष्य है क्या? इसके अन्दर क्या गुण हैं? मनुष्य का मनुष्य पर क्या हक़ है ? इन्सान की

हक़ीकत क्या है ? इन्सान को किसने पैदा किया है? किस लिए पैदा किया है ? यह वह प्रश्न है कि जिन पर मानव समाज के लिए एक एक व्यक्ति को चिन्तन व मनन करना चाहिए। इस देश में एकता व प्रेम तथा पारस्परिक विश्वास का वातावरण पैदा करना चाहिए। इस प्रकार अत्याचार की घटनाएं नहीं होनी चाहिए। मैं एक मज़हबी इन्सान की हैसियत से कहता हूं कि हमारे पाप और अत्याचार के फलस्वरूप दैनिक आपदायें आती हैं। ईश्वर यह दिखाता है कि मारने का सामान हमारे पास तुम से ज़्यादा है हमने आन्ध्र के तूफान व बाढ़ में इस का नमूना देखा है। यह घटना सीख देने के लिए घटी है। जब भी इस प्रकार की कोई घटना घटती है तो मैं डर जाता हूं कि प्रकृति का प्रकोप मानव की तरफ़ न बढ़े। मैं इससे किसी को अलग नहीं करता, जहां भी अत्याचार की घटनाएं होंगी ईश्वर वहां अपनी महिमा दिखायेगा।

www.abulhasanalinadwi.org